International Conference on Social Science & Humanities Trends
April 2025
International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
ISSN: 2584-2455

प्राचीन भारतीय चिंतन में पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण में निहित समृद्ध समाज की अवधारणा

विभा सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
(हिंदी साहित्य)
एन.के.बी.एम.जी.(पीजी) कालेज चंदौसी
E-mail-vibhasinghvettu1122@gmail.com

शोध सारांश

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण एक ऐसा मुद्दा है जिसने संपूर्ण विश्व को एक मंच पर एकत्रित कर दिया है, विगत दशकों में वैज्ञानिक खोजों एवं तकनीकी विकास ने एक तरफ मानव के कार्य को सरल बनाया वहीं दूसरी तरफ हमारे पर्यावरण को नकारात्मक रूप में प्रभावित किया है,जैसे- ओजोन परत(O2) का क्षरण,कार्बन डाइऑक्साइड (CO2) का उत्सर्जन, हरितगृह प्रभाव, जलवायु परिवर्तन आदि। वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास की यह आति एवं अंधाधुन दौड़ कहीं ना कहीं आने वाले समय के लिए बड़ा संकट है,तथा इस पर रोक लगाने हेतु वैश्विक एवं राष्ट्रीय स्तर पर सरकार द्वारा प्रयास किए गए है। तकनीकी विकास की लंबी दूरी तय करने के उपरान्त यह पाया गया है कि बिना व्यक्ति के चेतना एवं संवेदना के विकास के तकनीकी एवं वैज्ञानिकता का विकास लाभकारी नहीं हो सकता है, क्योंकि संवेदना एवं आंतरिक उत्थान के अभाव में व्यक्ति पर्यावरण संतुलन, सामंजस्य की अनिवार्यता और उसके महत्व को नहीं समझ सकता।

'मैकाइवर' एवं 'पेज' के अनुसार " समाज सामाजिक संबंधों का जाल है।"

तो स्पष्ट है कि बिना भावनाओं एवं संवेदनाओं के सामाजिक संबंधों में मजबूती नहीं आ सकती। अतः ऐसी भारतीय चिंतन धारा के मूल्यों का समझना आवश्यक है जिसने न सामाजिक संबंधों के भी परे जाकर पर्यावरण के साथ मजबूत सह-संबंध स्थापित किया। एवं समाज के भीतर प्राकृतिक तत्वों को भी समाज का अभिन्न अंग माना।
इसके माध्यम से व्यक्ति के आंतरिक उत्थान पर बल दिया जो कि समाज निर्माण के लिए महत्वपूर्ण अनिवार्यता है।

उन्होनें पर्यावरण तत्वों को पूजनीय मानकर उनके महत्व को मजबूती के साथ स्थापित किया। इसमें वन्यजीव संरक्षण, जल संरक्षण, भूमि संरक्षण आदि के तत्त्व मौजूद है।

प्राचीन भारतीय चिंतन में पर्यावरण संरक्षण केवल भौतिक संसाधनों के प्रबंधन तक सीमित नहीं था, बल्कि यह आध्यात्मिक, नैतिक और सांस्कृतिक चेतना से जुड़ा हुआ था। वेद, उपनिषद, पुराण, स्मृति-ग्रंथ तथा काव्य-साहित्य में प्रकृति के प्रति श्रद्धा, सहअस्तित्व और संतुलन की भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। पृथ्वी को माता, जल को जीवन और वायु को प्राण मानकर भारतीय मनीषा ने पर्यावरण को पवित्रता के स्तर तक प्रतिष्ठित किया।

वर्तमान वैश्विक संकट—जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव-विविधता का ह्रास मानव केन्द्रित विकास मॉडल की देन है। इसके विपरीत, प्राचीन भारतीय चिंतन में प्रकृति को 'उपभोग की वस्तु' नहीं, बल्कि 'सहजीवन का आधार' माना गया। भारतीय परंपरा में धर्म, दर्शन और साहित्य सभी में पर्यावरणीय संतुलन का विचार निहित है।

अतः प्रस्तुत शोध-पत्र में प्राचीन भारतीय ग्रंथों के आलोक में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा का विश्लेषण किया गया है साथ ही उसकी वर्तमान प्रासंगिकता की महत्ता को स्थापित किया गया है। क्योंकि बिना मानवता एवं मानवता की आंतरिक चेतना के विकास के समाज का विकास संभव नहीं है अतः एक स्वस्थ्य समाज के लिए स्वस्थ्य पर्यावरण आवश्यक है। अत: यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित पर्यावरण संरक्षण के महत्त्व को रेखांकित करते हुए समाज के कल्याण के मार्ग को चिन्हित करता है।

बीज शब्द: वैज्ञानिकता, तकनीकी, पर्यावरण संकट, संतुलन, सामंजस्य, आंतरिक उत्थान ,वेद, उपनिषद, प्रकृति-पूजा, पंचमहाभूत, सहअस्तित्व आदि।

उत्तर में हिमालय की ऊँची श्रृ्ंखलाओं जम्मू-कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी एवं पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में अरुणांचल प्रदेश तक फैला भारत देश, 22 भाषाओं एवं लगभग 19,500 से अधिक बोलियों विभिन्न प्रकार की वेश-भूषा,खान-पान, पूजा-पाठ आदि को समाहित किए हुए विविधता में एकता का प्रतीक बनकर वैश्विक पटल पर विराट संस्कृति चेतना का स्वरुप बनकर उपस्थित है।

वर्तमान परिदृश्य में जहॉ भारत ही नहीं बल्कि पूरा विश्व पर्यावरण की समस्या से जूझ रहा है, वहॉ भारतीय संस्कृति संपूर्ण विश्व के कल्याण का मार्ग है जिसने महत्त्वाकांक्षा से अधिक त्याग एवं समर्पण को महत्त्व दिया उपभोग, विलासिता, भौतिकवादी प्रवृत्ति, और अपने पराये के संकुचित भावों से उठकर संपूर्ण विश्व के कल्याण की कामना की है

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः ।
सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु ।
मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत् ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥1

अर्थात् सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी का शुभ देखें किसी को कोई कष्ट ना हो।

इसके अतिरिक्त पर्यावरण में उपस्थित समस्त जीवों एवं तत्वों के दोहन के स्थान पर सह-अस्तित्व एवं सह-संबंध को स्थापित करनी हेतु संपूर्ण सृष्टि में ब्रह्म का निवास माना गया है-

सर्व खिल्विदं ब्रह्म।2

भारतीय मनीषियों ने यह स्पष्ट किया कि बिना आंतरिक उत्थान के बाह्य उत्थान संभव नहीं है अतः आंतरिक संयम ही बाह्य संतुलन स्थापित कर सकता है। आज हम देखते हैं कि पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण व्यक्ति का आलस्य एवं उसका विलासितापूर्ण जीवन है। प्रति व्यक्ति द्वारा लगभग ~4.4 टन CO_2 का उत्सर्जन प्रतिवर्ष होता है इस आंकड़े के आधार पर हम वर्तमान में व्याप्त क्षणिक सुख,भोग, एवं विलास्ता की बढ़ती जा रही मानसिकता का पर्यावरण पर पढ़ रहे दबाव का अनुभव कर सकते हैं,यही कारण है कि भारतीय मनीषियों ने अंत:संयम पर बल दिया।

"आत्मानं रथिनं विद्धि, शरीरं रथमेव तु। बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ।।"3

अर्थात् इस जीवात्मा को तुम रथी, रथ का स्वामी समझो, शरीर को उसका रथ, बुद्धि को सारथी, रथ हांकने वाला, और मन को लगाम समझो । (लगाम - इंद्रियों पर नियंत्रण हेतु)

हिंदी साहित्य के साहित्यकार 'संजीव' ने भी अपने उपन्यास 'रह गई दिशाएँ इसी पार' में कहा है

"निहत्थे बौद्ध भिक्षु इसी बिनाह पर अपने से शक्तिशाली योद्धाओं के भ छक्के छुड़ा देते हैं। अपनी इच्छा शक्ति से वह चलायमान चीजों को भी रोक सकते हैं। एडमंड हिलेरी की नाव किसी योगी ने रोक लिया था जब वह दोबारा भारत आए थे। योग और प्राणायाम को ही ले वे शरीर की रूद्र धमनियों और ग्लैंड्स को भी खोल देते हैं सुप्त स्नायुतंत्र को भी जगा देते हैं।पश्चिम ने बाहर खोज हमने अंदर भारतीय और एशियाई चिंतन पद्धति मानती है कि अंतर्मुखी प्रवृत्तियों के सम्यक उद्दीपन से बहुत कुछ संभव है।"4

International Conference on Social Science & Humanities Trends
April 2025
International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
ISSN: 2584-2455

भारतीय चिंतन पद्धति में यह माना गया कि मनुष्य का शरीर आकाश,वायु,पृथ्वी,जल, एवं अग्नि कुल पांच तत्वों से मिलकर बना है अतः भारतीय संस्कृति इन पा ंच तत्वों के अतिरिक्त समस्त पर्यावरणीय प्राकृतिक तत्वों के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रोत्साहन हेतु देवी एवं देवता के रूप में इनकी पूजा और अर्चना की।

प्राचीनतम भारतीय संस्कृति में यज्ञ का विशेष महत्त्व था।जिसका उद्देश्य सुख,समृद्धि,पर्यावरण एवं प्रकृति संतुलन व शांति की स्थापना था।

अतः यज्ञों क्या अवसर पर अग्नि को देवता मानकर इस प्रकार स्तुति एवं आवाहन करते हुए कहते हैं

"ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥

मैं अग्नि की स्तुति करता हूँ, वे यज्ञ के पुरोहित दानादि गुणों से युक्त यज्ञ में देवों को बुलाने वाले एवं यज्ञ के फलरूपी रत्नों को धारण करने वाले हैं।"5

इसी प्रकार वायु का आवाहन एवं स्तुति कर द्वारा महत्त्व प्रदान किया

"वायुवा याहि दर्शनतेमे सोमा अरंकृताः। तेषां पाहि श्रुधि हवम् ॥

हे दर्शनीय वायु! आओ यह सोमरस तैयार है इसे पियो हम सोमपान के लिए तुम्हें बुला रहे हैं।"6

इसके अतिरिक्त धरती को माता और आकाश को पिता के रूप में पूजनीय एवं अन्य बल तथा दीर्घायु प्रदान करने वाला कहकर उनकी स्तुति एवं आवाहन करते हुए कहा है-

इदं द्यावापृथिवी सत्यम वस्तु पितर्मातर्य दिहोपबुवेवाम् भूतं देवानामवमें अवेभिर्विद्यामेषं वृजनं जीरदग्नुम:।

हे माता और पिता रूपी धरती और आकाश! इस यज्ञ में मेरे द्वारा की गई स्थितियों को सार्थक करो तुम रक्षा साधनों द्वारा हम स्तुति कर्ताओं के पास आओ जिससे हम अन्न,बल,और दीर्घायु प्राप्त करें।"7

अत्यधिक वनों की कटाई, नगरीकरण औद्योगिकरण आदि के कारण भूमिगत जल में गिरावट एवं बाढ़ एवं सूखे की बारंबारता की स्थिति उत्पन्न होने के कारण,भारत सरकार द्वारा जल संरक्षण हेतु जल शक्ति अभियान:कैच द रेन, अटल भू-जल योजना, नमामि गंगे जैसी अनेक योजनाएं लागू की है अतः प्राचीनतम भारतीय चिंतन में जल की अमृत और औषधि धारण करने वाले तत्व के रूप में स्तुति एवं अर्चना की गई है

"अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्, अपामुत प्रशस्तये। देवा भवत वाजिनः॥

जल के भीतर अमृत और औषधीय विद्यमान है। हे ऋत्विजो! उत्साह पूर्वक उस जल की प्रशंसा करो।"8

इसी प्रकार पीपल जैसे अधिक ऑक्सीजन देने वाले वृक्षों एवं पलाश जैसे औषधियें गुणों वाले वृक्षों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए उन्हें जीवनदायनी औषधियों का निवास स्थान कहकर उनके महत्त्व को इस प्रकार रेखांकित किया है

"अश्रत्ये वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता:गोभाज इत्किलासय यत्सनवथ पूरूषम्।

हे औषधियों! तुम पीपल के वृक्ष पर रहती हो एवं पलाश वृक्ष पर तुम्हारा निवास स्थान है।"9

वैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि सूर्य से प्राप्त होने वाली सौर ऊर्जा ही पृथ्वी पर जीवन के लिए ऊर्जा का मुख्य स्रोत है।शोधों ने यहभी प्रमाणित किया है कि पृथ्वी पर ऋतुओं का आगमन पृथ्वी का झुकाव और परिक्रमण के कारण पृथ्वी के अलग-अलग हिस्सों पर साल भर सूर्य की किरणें का अलग-अलग कोणों पर पड़ने के कारण होता है।अतःप्राचीनतम भारतीय संस्कृति में सूर्य को प्रकाश का देवता है रथ एवंऔर ऋतुओं का आगमन करने वाला कहा गया है

"उतो महमिन्दुभि:षड्युक्त्का॑ऺ अनुसेषिधत् गोभिर्यवं च चर्कृषत्:।

जिस प्रकार किसान बैलों के द्वारा बार-बार खेत जोतता है, उसी प्रकार सूर्य मेरे लिए क्रम से छः ऋतुएं लाए थे। ये ऋतुएं सोमरत से युक्त थी।"10

इसके अतिरिक्त भारतीय चिंतन में यह माना गया है कि जीवन में सबसे मूल्यवान चीज वही है जो हमारे अस्तित्व और मानवता को बचाती है। अतः जल,अन्न,ज्ञान एवं सद् विचार ही जीवन की आधारशिला है, तथा बाहरी आभूषण या कीमती पत्थर केवल दिखावे की वस्तु है

"पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ।।"11

अर्थात् पृथ्वी पर तीन रत्न है जल,अन्न व सद्विचार (ज्ञान)परंतु मूर्ख लोग पत्थर के टुकड़ों को रत्न की संज्ञा देते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो भवन निर्माण,औद्योगिकरण,सड़क निर्माण,विलासिता पूर्ण जीवन शैली आदि को आधुनिकता का मानक समझा जाता है जो की मात्र दिखावे की वस्तु है जबकि जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी स्वच्छ पीने योग्य जल, जिसका प्रतिशत धरती पर मात्र 0.3% है अत: जल पृथ्वी का बहुमूल्य रत्न है, दूसरा अन्न जो उर्वरक भूमि एवं स्वच्छ पर्यावरण की देन है और तीसरा सद्विचार जो व्यक्ति को आत्मसंतोष व आंतरिक व बाह्य उत्थान का कारक है, पृथ्वी पर यही तीन रत्न है लेकिन व्यक्ति मूर्खता वश इनके महत्त्व को नहीं समझ रहा है एवं विकास

की अंधी दौड़ में दौड़ता जा रहा है। भारतीय चिंतन में पर्यावरण एवं प्रकृति का विशेष महत्त्व रहा है जो उपयुक्त विश्लेषण से स्पष्ट है।

इसके अतिरिक्त भारतीय चिंतन के महत्वपूर्ण ग्रंथ 'गीता' में श्री कृष्ण भगवान ने अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा है कि

"अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञःकर्मसमुद्भवः।।"

"कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।
तस्मात्सर्वगतंब्रह्मनित्यंयज्ञेप्रतिष्ठितम्।।"12

अर्थात् अन्न से जीवों का पालन होता है, अन्य वर्षा से उत्पन्न होता है, वर्षा यज्ञ (कर्तव्य पूर्ण कर्म) से होती है भावार्थ यह है कि मानव का कर्तव्य है कि वह प्राकृतिक चक्र, जल चक्र, कृषि चक्र, जैव चक्र को बनाए रखें पर्यावरणीय संतुलन को बिगाड़ना धर्म विरुद्ध है इसके अलावा तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस में वर्णित प्रकृति का सौंदर्य वर्णन प्रकृति एवं पर्यावरण के महत्व को स्थापित करता है। राम, लक्ष्मण,भरत, शत्रुघ्न द्वारा विद्या अध्ययन हेतु राजमहल की विलासिता पूर्ण सुविधाओं से दूर प्राकृतिक वातावरण में स्थित गुरु आश्रम जाना प्रकृति के महत्व पर प्रकाश डालता है तुलसीदास जी वृक्षों और बादल की तुलना सज्जन व्यक्ति से करते हुए कहते हैं

"सज्जन बरषहि जल्द भवानी।
करइ परोपकार बिना आनी।।
****
बरू बर फूलन्हि भरपुरा।
करहीं राम सीतहि मम तूरा।।

भारतीय चिंतन धारा में महाकवि कालिदास के नाम से विख्यात कालिदास द्वारा रचित कुमारसम्भवम् वह मालविकाग्निमित्रम् जैसे साहित्य में प्रकृति को प्रेम,सौंदर्य, एवं भावनाओं की जागृति व जीवन के आधार के रूप में चित्रित कर उसके संरक्षण के अनिवार्यता को स्पष्ट किया गया है।

कालिदास जी कुमारसम्भवम् में प्रकृति का सौंदर्य वर्णन करते हुए कहते हैं

"दिक्षु प्रसृत जलधा जल बिन्दु शीतला

स्निग्धद्रुमावलिशिखा गगनान्तराला:।"

अर्थात् गंगा की धाराएं दिशाओं में फैल कर शीतलता प्रदान करती हैं,और हरे-भरे वृक्षों की पत्तियां आकाश तक झूल रही है।

इसके साथ ही कालिदास जी द्वारा रचित मालविकाग्निमित्रम् में वर्णित प्रकृति सौंदर्य में वन्य जीव एवं जल का सुंदर चित्र प्रस्तुत कर उसके महत्त्व को रेखांकित किया गया है

सरोजिनीषु हंसानां कलरव: जल वृत:।
वनान्तरेषु मृगाणां क्रीडारव: प्रिय: ।।

अर्थात् कामलिनी से भरे सरोवरों में हंसों का कलरव और वन में मृगों की क्रीड़ा की ध्वनि अत्यंत प्रिय लगती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय चिंतन पद्धति के अंतर्गत प्रकृति एवं पर्यावरण के संरक्षण व उसके महत्त्व को प्रमुख रूप से स्वीकार किया गया है। भारतीय मनीषियों ने एक तरफ प्रकृति के समस्त तत्वों को देवी-देवता का दर्जा देकर जीवन में उनके महत्त्व को स्पष्ट किया वहीं दूसरी ओर आत्मसंयम, त्याग, समर्पण व सात्विक जीवन जैसे तत्वों को सुखी जीवन का प्रमुख तत्व बाताकर तथा संपूर्ण सृष्टि में ब्रह्म की उपस्थिति(सर्व खल्विदं ब्रह्मं) का मत प्रस्तुत कर पर्यावरण संरक्षण, संतुलन एवं वन्य जीव संरक्षण पर बल दिया है।

वैदिक संस्कृत भाषा की विरासत जब लौकिक संस्कृत, संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट, पुरानी हिंदी से होते हुए हिंदी भाषा, खड़ी बोली तक का सफलता कर छायावाद तक पहुॅंचती है वहाॅं प्रकृति के सौंदर्य वर्णन के साथ-साथ प्रकृति के विध्वंसक रूप का भी चित्र मिलता है,जो वर्तमान युग को चेतावनी देता प्रतीत होता है।

'जयशंकर प्रसाद जी' द्वारा रचित 'कामायनी' नामक महाकाव्य में प्रकृति की विधि का वर्णन करते हुए कहा गया है

विकल वासना के प्रतिनिधि वे,
सब मुरझाए चले गए;
आह! जले अपनी ज्वाला से,
फिर वे जल में गले, गए!"13

अर्थात् स्वयं के स्वार्थ एवं विलसतापूर्ण जीवन में लिप्त देवताओं ने प्रकृति के विरुद्ध कार्य किया जिसका परिणाम यह निकला की संपूर्ण पृथ्वी प्रकृति के प्रकोप से जलमग्न हो गई है और उसमें सभी लोग खत्म होते जा रहे हैं जिसका कारण वे स्वयं

है क्योंकि उन्होंने प्रकृति एवं पर्यावरण के महत्व को नहीं समझा और अब जब उनके वैभव का साम्राज्य खत्म हो रहा है तब उन्हें अपनी गलती पर अफसोस प्रकट करते हुए कहते हैं

प्रकृति रही दुर्जेय, पराजित
हम सब थे भूले मद में;
भोले थे, हाँ तिरते केवल,
सब विलासिता के नद में।14

इसी प्रकार प्रकृति के सुकुमार कवि कहे जाने वाले कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने भी अपनी परिवर्तन नामक कविता में प्रकृति की विभीषिका का वर्णन करते हुए कहा है

तुम्हारा ही तांडव नर्तन
विश्व का करुण विवर्तन!
तुम्हारा ही नयनोन्मीलन,
निखिल उत्थान, पतन!

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने युद्ध और हिंसा से उत्पन्न भयानक विनाश का चित्रण किया है।

इसके अतिरिक्त अत्यधिक वैज्ञानिकीकरण एवं प्राकृतिक दोहन से प्रकृति एवं पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ जाने से बाढ़ एवं सूखे के कारण व्याप्त होने वाले अकाल का चित्रण साहित्यकारों द्वारा किया गया है।

हिंदी साहित्य के साहित्यकार केदारनाथ सिंह अपनी अकाल में दूब नामक कविता में सूखे के कारण पड़े अकाल का चित्रण करते हुए कहते हैं

भयानक सूखा है
मवेशी खड़े हैं
एक- दूसरे का मुँह ताकते हुए
कहते हैं पिता
ऐसा कल कभी नहीं देखा।15

इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्तमान परिदृश्य में जहां शक्ति प्रदर्शन एवं शक्ति विस्तार व वर्चस्व हेतु युद्धों की बारंबारता व सम्भावनाएँ बढ़ती जा रही है। इन सब के बीच मानव त्रासदी का दृश्य इस ओर संकेत करता है कि बिना आंतरिक उत्थान के मात्र तकनीकी विकास के द्वारा मनुष्य केवल विनाश कर सकता है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका द्वारा जापान के हीमोंसीमा और नागासाकी पर गिराए गए परमाणु बम,

इसके अलावा रूस-यूक्रेन युद्ध (2014) व अमेरिका-ईरान युद्ध (2026) इन सभी युद्धों में भयानक रेडियोधर्मी प्रदूषण के कारण मानव जीवन की त्रासदी, भारतीय ज्ञान परंपरा की पुर्नविवेचना की अनिवार्यता पर बल देती है।

निष्कर्ष

प्राचीन भारतीय चिंतन में प्रकृति और पर्यावरण का संरक्षण केवल धार्मिक या आध्यात्मिक कर्तव्य नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक उत्तरदायित्व भी था। पूजा-पद्धतियों, अनुष्ठानों और साहित्यिक रचनाओं में पर्यावरणीय तत्वों की उपस्थिति ने यह सुनिश्चित किया कि आने वाली पीढ़ियां भी इस विरासत को आगे बढ़ाएँ। अतः निष्कर्षत: हम कह सकते हैं की प्राचीन भारतीय चिंतन में प्रकृति एवं पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन के हेतु विभिन्न प्रकार के मत, विश्वास एवं परंपरा का पालन किया गया। भले ही उसका रूप आध्यात्मिक हो परंतु कहीं ना कहीं पर्यावरणीय समायोजन एवं संवर्धन का मंत्र समाहित था। उदाहरण के तौर पर पूजा-पाठ एवं अनुष्ठानों के अवसरों पर पीपल के वृक्ष व बरगद के वृक्ष की परिक्रमा करना, उन्हें द्वीप दिखाना एवं उनकी पूजा करना, पेड़- पौधों में देवी-देवता का निवास स्थान समझना नदियों की पूजा करना इत्यादि। हम यह भी देखते हैं की विभिन्न प्राचीनतम साहित्य में प्रकृति का सौंदर्य वर्णन एवं पर्यावरण तत्वों की प्रधानता आगे आने वाले साहित्य को विरासत के रूप में प्राप्त हुई जिसके द्वारा आने वाले समय में भी पर्यावरण एवं प्रकृति के महत्त्व, उसके बदलते रूप एवं समृद्ध मानव समाज के मार्ग को रेखांकित किया जा सका।

सन्दर्भ सूची

1.https://w.w.w.vedaboys.com/sarve-bhavantu-sukhinaha

2.शर्मा श्री पीतांबर पंडित(1894)छंदोग्य उपनिषद् द्वारा ईश्वर आश्रम ट्रस्ट नारायण नागर प्रेस, तृतीय पाठ चतुर्थदश खंड पेजनंबर- 518

3.कठोपनिषद् सानुवाज शंकरभाष्य सहित घनश्याम दास जलान गीता प्रेस गोरखपुर संस्करण (1951) तृतीय वल्ली
पेज नंबर-65

4.संजीव(रह गईं दिशाएं इसी पार)(2018)। राजकमल प्रकाशन पेज नंबर-113

5. शर्मा डॉ.गंगा सहाय (2016) संस्कृत साहित्य प्रकाशन प्रथम मंडल 1 सूक्ति, 1मंत्र, पेज न.154

6. वही पृष्ठ, प्रथम मंडल/ 2 सूक्ति/ 1 मंत्र/ पेज नंबर 155

7.वही पृष्ठ प्रथम मंडल/ सूक्ति 185/ 11वॉ मंत्र पेज नंबर 478

8. वही पृष्ठ प्रथम मंडल/सूक्ति 23/ 19 वॉ मंत्र पेज नंबर 185

9. वही पृष्ठ दसवाॅं मंडल/ सूक्ति 95 /पांचवाॅं मंत्र पेज नंबर 1745

10. वही पृष्ठ प्रथम मंडल/ सूक्ति 23/ 19वाॅं मंत्र पेज नंबर 185

11.NCERT नई दिल्ली/ कक्षा 10 /संस्कृत शेमुषी/ भाग 2/ संस्करण 2019 /प्रथम पाठ/ पेज नंबर- 1

12. श्रीमद्‌भगवद्‌गीता/ गीताप्रेस,गोरखपुर/ तृतीय अध्याय/14,15 श्लोक/पेज नंबर-61

13. प्रसाद जयशंकर (2021) कामायनी (लोक भारती प्रकाशन) चिंता सर्ग पेज नंबर-3

14.प्रसाद जयशंकर (2021) कामायनी (लोक भारती प्रकाशन) चिंता सर्ग पेज नंबर-2

15. श्रीवास्तव परमानंद,त्रिपाठी अनिल(2019)
प्रतिनिधि कविताएं केदारनाथ सिंह/ राजकमल प्रकाशन/पेज नंबर-40